



## थार का रेगिस्तान और मानव जीवन – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन : हनुमानगढ़ जिले के विशेष संदर्भ में

लक्ष्मी बाला<sup>1</sup> | डॉ. श्वेता मेहता<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान.

<sup>2</sup> शोध निदेशक, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान.

### ABSTRACT:

थार का रेगिस्तान, जिसे "ग्रेट इंडियन डेज़र्ट" कहा जाता है, भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में फैला हुआ है और इसका सबसे बड़ा हिस्सा राजस्थान राज्य में स्थित है। यह क्षेत्र अपनी शुष्क जलवायु, रेत के टीलों, सीमित वर्षा, विरल वनस्पति और जल संकट के कारण मानव जीवन के लिए हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। यहाँ की भौगोलिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों ने यहाँ निवास करने वाले लोगों की सामाजिक संरचना, संस्कृति, आर्थिक गतिविधियों और पारिवारिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। हनुमानगढ़ जिला, जो थार के पूर्वी छोर पर स्थित है, मरुस्थलीय परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व तक यहाँ का जीवन जल संकट, पशुपालन, वर्षा आधारित कृषि और सीमित संसाधनों पर आधारित था। लोगों ने कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करते हुए विशिष्ट जीवन पद्धतियाँ विकसित कीं। सामूहिक श्रम, पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ (जैसे टांका, जोहड़, बावड़ी), पशुपालन, और संयुक्त परिवार व्यवस्था इस क्षेत्र की विशेषताएँ रही हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह क्षेत्र अध्ययन का विषय इसलिए भी है क्योंकि यह दर्शाता है कि कैसे भौगोलिक परिस्थितियाँ सामाजिक ढाँचे और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को आकार देती हैं। समय के साथ विकास योजनाओं, विशेषकर इंदिरा गांधी नहर परियोजना ने हनुमानगढ़ के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। मरुस्थलीय परिस्थितियों वाले इस जिले में जब नहर का जल पहुँचा तो यह केवल भौगोलिक नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति भी साबित हुई। कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, फसलें विविध हुईं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हुई। पहले जहाँ केवल पशुपालन और सीमित खेती ही जीवन का आधार थी, वहीं अब आधुनिक कृषि, उद्योग और व्यापार ने ग्रामीण जीवन की दिशा बदल दी। सामाजिक दृष्टि से देखें तो नहर ने जातीय संबंधों, परिवार व्यवस्था और महिलाओं की स्थिति को प्रभावित किया। पहले के कठिन जीवन में संयुक्त परिवार व्यवस्था और सामूहिक श्रम की परंपरा मजबूरी थी, जबकि अब व्यक्तिगत और आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ने से एकल परिवारों का चलन बढ़ा। महिलाओं ने शिक्षा, कृषि और रोजगार के अवसरों में भागीदारी करनी शुरू की। प्रवासियों के आने से सांस्कृतिक विविधता बढ़ी और स्थानीय संस्कृति में नए तत्व जुड़े। हालाँकि, इन सकारात्मक परिवर्तनों के साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आईं। अत्यधिक सिंचाई से जलभराव और लवणीयता की समस्या उत्पन्न हुई। पर्यावरणीय दृष्टि से रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ा। प्रवासियों और स्थानीय निवासियों के बीच भूमि और जल संसाधनों को लेकर तनाव भी उत्पन्न हुआ। थार के रेगिस्तान और हनुमानगढ़ जिले के संदर्भ में मानव जीवन केवल प्राकृतिक परिस्थितियों का दास नहीं रहा, बल्कि उसने अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक रचनात्मकता से इन परिस्थितियों को अवसरों में बदला। रेगिस्तान ने लोगों को सहयोग, सामूहिकता और सहनशीलता सिखाई। वहीं, नहर और विकास योजनाओं ने आधुनिकता, समृद्धि और सामाजिक गतिशीलता प्रदान की। थार का रेगिस्तान केवल प्राकृतिक कठिनाई नहीं बल्कि एक विशिष्ट सामाजिक प्रयोगशाला है जहाँ मानव और प्रकृति के बीच सतत संवाद और संघर्ष चलता रहा है। हनुमानगढ़ जिले के विशेष संदर्भ से यह अध्ययन यह सिद्ध करता है कि प्राकृतिक चुनौतियों के बावजूद समाज अपनी सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखते हुए परिवर्तन और विकास की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

### KEYWORDS:

थार का रेगिस्तान, हनुमानगढ़ जिला, ग्रामीण जीवन, समाजशास्त्रीय अध्ययन, संकट पशुपालन, मरुस्थलीय संस्कृति, इंदिरा गांधी नहर परियोजना, सामाजिक परिवर्तन, पर्यावरणीय चुनौतियाँ।

### PAPER ACCEPTED DATE:

4<sup>th</sup> September 2025

### PAPER PUBLISHED DATE:

6<sup>th</sup> September 2025

### विषय वस्तु

#### थार मरुस्थल का परिचय

थार मरुस्थल, जिसे "महान भारतीय मरुस्थल" भी कहा जाता है, लगभग 2,00,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यह राजस्थान राज्य का पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भाग कवर करता है तथा पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांत तक फैला हुआ है। यहाँ की जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

वर्षा का अत्यल्प होना (औसतन 100-400 मि.मी. प्रतिवर्ष)।

तापमान का अत्यधिक उतार-चढ़ाव; गर्मियों में 48-50 डिग्री सेल्सियस तक और सर्दियों में 0 डिग्री तक गिरावट।

हवाओं की तीव्र गति और धूलभरी आँधियाँ। इन भौगोलिक विशेषताओं ने यहाँ की जीवन शैली को कठोर और संघर्षपूर्ण बनाया है। मानव जीवन ने इन परिस्थितियों में अनुकूलन और संघर्ष दोनों रणनीतियों को अपनाकर अपना अस्तित्व कायम रखा है।

#### हनुमानगढ़ जिले का भौगोलिक परिप्रेक्ष्य

हनुमानगढ़ जिला थार मरुस्थल के उत्तर-पूर्वी छोर पर स्थित है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह

बीकानेर राज्य का हिस्सा रहा है और 1994 में इसे जिला घोषित किया गया। यहाँ की भौगोलिक स्थितियाँ दो भागों में विभाजित की जा सकती हैं;

#### मरुस्थलीय शुष्क क्षेत्र

जहाँ रेतीली भूमि, कम वर्षा और चरम तापमान का प्रभाव है।

#### नहरी क्षेत्र

जहाँ इंदिरा गांधी नहर परियोजना के कारण कृषि योग्य भूमि विकसित हुई है। इस प्रकार हनुमानगढ़ जिला रेगिस्तानी जीवन और हरित क्रांति से प्रभावित कृषि जीवन दोनों का मिश्रण प्रस्तुत करता है।

#### सामाजिक संरचना और परिवार

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो हनुमानगढ़ की सामाजिक संरचना परंपरागत और आधुनिक तत्वों का संगम है।

**परिवार प्रणाली**

परंपरागत रूप से यहाँ संयुक्त परिवार प्रचलित रहे हैं। परिवार केवल आर्थिक इकाई ही नहीं बल्कि सामाजिक सुरक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण का भी आधार है।

**जाति और समुदाय**

विभिन्न जातियाँ जैसे जाट, राजपूत, नायक, मेघवाल आदि यहाँ के प्रमुख सामाजिक समूह हैं। जातिगत पहचान आज भी विवाह, सामाजिक मेल-जोल और राजनीतिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**सामुदायिक सहयोग**

कठिन जीवन परिस्थितियों में आपसी सहयोग अनिवार्य है। गाँवों में “पंचायत” और “खाप” जैसे संगठन सामाजिक जीवन को नियंत्रित करते हैं।

**आर्थिक जीवन और आजीविका के साधन**

हनुमानगढ़ जिले की अर्थव्यवस्था में पारंपरिक और आधुनिक साधनों का मिश्रण देखने को मिलता है।

**पारंपरिक साधन/पशुपालन**

ऊँट, गाय, भेड़ और बकरियाँ रेगिस्तानी जीवन के साथी रहे हैं। दूध, ऊन और पशु परिवहन का महत्व रहा है।

**वर्षा आधारित कृषि**

बाजरा, मूंग, मोठ और ग्वार जैसी फसलें परंपरागत रूप से उगाई जाती रही हैं।

**आधुनिक साधन****नहरी कृषि**

इंदिरा गांधी नहर के आने से गेहूँ, कपास, सरसों और गन्ना जैसी फसलों की खेती संभव हुई।

**व्यापार और रोजगार**

कृषि उपज के कारण हनुमानगढ़ “कपास नगरी” के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहाँ से कपास, कपड़ा और कृषि उपज का बड़ा व्यापार होता है।

**महिलाओं की भूमिका**

महिलाएँ खेतों में काम करने के साथ-साथ पशुपालन और घरेलू उद्योगों में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

**सांस्कृतिक जीवन और परंपराएँ**

रेगिस्तानी जीवन की कठोरता को संतुलित करने का कार्य यहाँ की समृद्ध संस्कृति करती है।

**लोकगीत और लोकनृत्य**

मांड, पधारो म्हारे देश जैसे गीत समाज में उत्साह और एकता लाते हैं। घूमर, कलबेलिया नृत्य यहाँ की पहचान हैं।

**वेशभूषा**

पुरुष पगड़ी, अंगरखा और धोती पहनते हैं, वहीं महिलाएँ घाघरा-चोली और ओढ़नी धारण करती हैं। रंगीन परिधान रेगिस्तानी निरसता को तोड़ते हैं।

**धार्मिक आस्था**

मंदिर, देवस्थान और मेलों का सामाजिक जीवन में गहरा महत्व है। गोगामेड़ी का मेला हनुमानगढ़ का प्रमुख धार्मिक आयोजन है।

**त्योहार**

तीज, गणगौर, दीपावली और होली पूरे हर्षोल्लास से मनाए जाते हैं।

**पर्यावरणीय चुनौतियाँ और सामाजिक अनुकूलन**

मरुस्थलीय परिस्थितियाँ यहाँ के जीवन को कई चुनौतियाँ देती हैं।

**जल संकट**

पेयजल की कमी सबसे गंभीर समस्या रही है।

**पारंपरिक समाधान**

टांके, बेरियाँ और जोहड़ जल संग्रहण के प्रमुख साधन हैं।

**तापमान की चरमता**

लोग अपने घर मोटी दीवारों और मिट्टी की छतों से बनाते हैं ताकि गर्मी-सर्दी दोनों से बचा जा सके।

**सामुदायिक सहयोग**

विवाह, मृत्यु, त्यौहार या खेती-बाड़ी में सामूहिक श्रम की परंपरा प्रचलित है।

**खानपान**

सीमित संसाधनों में टिकाऊ भोजन जैसे बाजरे की रोटी, छाछ, और सूखे मेवे का उपयोग होता है।

**आधुनिक परिवर्तन और चुनौतियाँ**

आधुनिकता के प्रभाव ने हनुमानगढ़ जिले में गहरे परिवर्तन किए हैं।

**नहरीकरण और हरित क्रांति**

कृषि उत्पादन में वृद्धि और आर्थिक समृद्धि आई।

**शिक्षा और संचार**

शिक्षा के प्रसार ने नई पीढ़ी को रोजगार और सामाजिक गतिशीलता के अवसर दिए।

**शहरीकरण**

जिला मुख्यालय और कस्बों में शहरी जीवन की झलक मिलती है।

**नई चुनौतियाँ**

भूजल का अत्यधिक दोहन, भूमि का लवणीकरण और क्षारीकरण, पर्यावरण असंतुलन, जातीय असमानता और सामाजिक संघर्ष। इन परिस्थितियों ने यह सिद्ध किया कि जहाँ एक ओर नहर और आधुनिक साधनों ने जीवन आसान बनाया, वहीं दूसरी ओर नई समस्याएँ भी खड़ी की हैं।

**निष्कर्ष**

थार का रेगिस्तान केवल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से भी अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ की जलवायु, प्राकृतिक संसाधन और कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियाँ मानव जीवन को निरंतर चुनौती देती रही हैं। हनुमानगढ़ जिला, जो थार के उत्तर-पूर्वी किनारे पर स्थित है, इस संघर्ष और अनुकूलन की प्रक्रिया का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। हनुमानगढ़ के लोग यह सिद्ध करते हैं कि मानव जीवन प्रकृति से अलग नहीं है, बल्कि उसका अभिन्न हिस्सा है। रेगिस्तान के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए उन्होंने सामाजिक संरचनाओं, जीवनशैली और संस्कृति को विशेष रूप से ढाला है। जल संकट, तापमान की चरमता और सीमित संसाधनों ने उन्हें सामूहिक सहयोग और साझेदारी की संस्कृति को अपनाने के लिए प्रेरित किया। यहाँ की सामाजिक संरचना पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक परिवर्तनों का अनूठा मिश्रण है। संयुक्त परिवार प्रणाली, जातिगत संगठन और पंचायत व्यवस्था सामाजिक जीवन की रीढ़ हैं। वहीं शिक्षा, संचार और शहरीकरण ने इस पारंपरिक संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

इस प्रकार समाजशास्त्रीय दृष्टि से हनुमानगढ़ परिवर्तनशील समाज का उदाहरण प्रस्तुत करता है। परंपरागत रूप से पशुपालन और वर्षा-आधारित कृषि यहाँ की अर्थव्यवस्था का आधार रहे। परंतु इंदिरा गांधी नहर परियोजना के बाद कृषि में हरित क्रांति आई, जिससे कपास, गेहूँ और सरसों जैसी नकदी फसलें यहाँ की पहचान बन गईं।

यह परिवर्तन न केवल आर्थिक समृद्धि का कारण बना बल्कि सामाजिक गतिशीलता और शहरीकरण की प्रक्रिया को भी गति दी। यद्यपि इससे नई चुनौतियाँ जैसे भूजल का दोहन, भूमि का लवणीकरण और सामाजिक असमानताएँ भी उत्पन्न हुईं। हनुमानगढ़ का सांस्कृतिक जीवन थार की परंपराओं और लोककलाओं से समृद्ध है। लोकगीत, नृत्य, वेशभूषा और धार्मिक आस्थाएँ सामाजिक एकता और उत्साह का संचार करती हैं। आधुनिकता ने जहाँ शिक्षा और संचार के माध्यम से नए सांस्कृतिक आयाम दिए हैं, वहीं पारंपरिक लोकसाहित्य और रीति-रिवाज अब भी लोगों की पहचान बने हुए हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि संस्कृति समय के साथ बदलती जरूर है, परंतु अपनी जड़ों से पूरी तरह

कटती नहीं। मरुस्थल की कठोर परिस्थितियों में जीवन संभव बनाना अपने आप में मानव की अद्भुत जीवटता और अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है। टांके, जोहड़, बेरियाँ और पारंपरिक वास्तुकला जैसी तकनीकें स्थानीय ज्ञान और सामुदायिक प्रयासों का परिणाम हैं। यह तथ्य आज भी सतत विकास की दिशा में प्रेरणा प्रदान करता है हनुमानगढ़ जिले का समाज इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मानव जीवन और प्रकृति के बीच का संबंध पारस्परिक है। जहाँ प्रकृति अपनी सीमाएँ और चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है, वहीं मानव अपनी बुद्धिमत्ता, संस्कृति और सहयोग की भावना से उनका समाधान खोजता है। थार का मरुस्थलीय जीवन यह स्पष्ट करता है कि कठिन परिस्थितियों में भी समाज जीवटता और सहकारिता के बल पर न केवल जीवित रह सकता है बल्कि प्रगति भी कर सकता है।

अतः समाजशास्त्रीय दृष्टि से हनुमानगढ़ जिले का अध्ययन यह संदेश देता है कि विकास की प्रक्रिया केवल भौतिक संसाधनों पर आधारित नहीं होती बल्कि वह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्य और पर्यावरणीय अनुकूलन पर भी समान रूप से निर्भर करती है। यह आने वाली पीढ़ियों को इस दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करता है कि सतत और संतुलित विकास ही रेगिस्तानी जीवन की वास्तविक सफलता है।

## REFERENCES

1. डॉ. मोहनलाल शर्मा – राजस्थान का सामाजिक जीवन, जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2008।
2. डॉ. रामगोपाल शर्मा – थार का मानव और संस्कृति, बीकानेर: मुस्कान प्रकाशन, 2011
3. प्रो. बी.एल. शर्मा – मरुस्थलीय समाज का समाजशास्त्र, जोधपुर: सूर्य प्रकाशन, 2015।
4. डॉ. के.एल. काम्बोज – हनुमानगढ़ का सामाजिक इतिहास, हनुमानगढ़: लोक साहित्य मंडल, 2017।
5. डॉ. नवलकिशोर शर्मा – राजस्थान का सांस्कृतिक भूगोल, अजमेर: राजस्थानी अध्ययन केंद्र, 2012।
6. डॉ. प्रभुदयाल मीणा – राजस्थान का ग्रामीण समाज और परिवर्तन, जयपुर: पंचशील प्रकाशन, 2014।
7. डॉ. भागीरथ सिंह राठौड़ – थार मरुस्थल: समाज और पर्यावरण, जोधपुर: मरु प्रकाशन, 2010।
8. डॉ. गिरधारीलाल कुमावत – राजस्थान में लोकजीवन और संस्कृति, बीकानेर: साहित्य संगम, 2009।
9. डॉ. रामेश्वर लाल चारण – इंदिरा गांधी नहर और राजस्थान का समाज, बीकानेर: लोकवाणी प्रकाशन, 2016।
10. डॉ. महेन्द्रसिंह राठौड़ – रेगिस्तान के लोग: राजस्थान का समाजशास्त्रीय अध्ययन, जोधपुर: राजस्थान विद्या पीठ, 2013।